संयोग–वियोग की नश्वरता

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

संयोग–वियोग प्रकृति का नियम है। हर संयोग के साथ वियोग जुड़ा रहता है। इस संसार में जो आया है वह एक दिन अवश्य जाएगा। शरीर नश्वर है और आत्मा शाश्वत है। शरीर में परिवर्तन होता रहता है। यह परिवर्तन अवस्थाओं का परिवर्तन है। प्रत्येक क्रिया द्रव्य क्षेत्र काल, भाव के अनुसार चलती रहती है। जीवन का अर्थ है– जन्म से मृत्यु के बीच का समय। जीवनयापन तो संसार के सभी प्राणी करते हैं किन्तु कौन कैसे जीता है? यह महत्वपूर्ण है।

जीवन मानव, दानव, पशु–पक्षी सभी यापन करते हैं। सभी की दिनचर्या अलग–अलग है। धर्म एक ऐसा तत्व है जो मनुष्य को अन्य जीवों से अलग करता है। जीवन में उन्नति के लिए विधायक भावों को लाना आवश्यक है। धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टि से जीवन जीना चाहिए। व्यक्ति महान् तभी बनता है जब चिन्तन रचनात्मक होता है। नकारात्मक विचारों को त्याग देना चाहिए। विधायक भाव दुःख में से सुख निकालता है।

नकारात्मक भाव सुख को भी दुःख में बदल देता है। एक अध्यापक ने बोर्ड पर एक रेखा खींच दी और शिष्यों से कहा कि रेखा को बड़ी करो। इसके माध्यम से वह विद्यार्थियों को परीक्षण करना चाहता था। अनेक विद्यार्थियों ने रेखा को मिटाकर उसके स्थान पर बड़ी रेखा खींच दी। कुछ विद्यार्थियों ने रेखा के नीचे उससे बड़ी रेखा खींच दी। अध्यापक ने विद्यार्थियों के बुद्धि का परीक्षण कर लिया। जिन विद्यार्थियों ने रेखा को मिटाकर बड़ी रेखा खींची थी वे नकारात्मक भाव वाले थे और जिन विद्यार्थियों ने रेखा को बिना मिटाये उसके नीचे उससे बड़ी रेखा खींची वे विधायक भाव वाले विद्यार्थी थे। जहां पर रचनात्मक भाव रहता है वहां निर्माण होता है और जहां पर नकारात्मक भाव होता है वहां पर विनाश होता है। मानव को आत्मोन्नति के लिए रचनात्मक भावों का सहारा लेना चाहिए। किसी की उन्नति को देखकर प्रसन्नता की अनुभूति होनी चाहिए और आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए।

मानव जीवन में सुख और दुःख का द्वन्द्व चलता रहता है। सुख में मानव के विचार विधायात्मक रहते हैं और दुःख में नकारात्मक। जीवन एक प्रवाह की तरह है, जहां ढ़ेर सारी खुशियों के बीच में दुःख भी आते रहते हैं। सुख में आदमी सुख का अनुभव करता है और दुःख में दुःख का। सुख–दुःख मानव जीवन में आने वाले दो पड़ाव हैं। जो व्यक्ति सुख में न तो अधिक सुखी होता है और दुःख में न अधिक दुःखी होता है वही सच्चा मानव है। यह सुख–दुःख कभी न खत्म होने वाला एक चक्र है। जैसे चक्र का पहिया ऊपर नीचे हुआ करता है वैसे जीवन में सुख–दुःख आते जाते रहते हैं।

जीवन की परिस्थितियां तो कर्मों पर आधारित होती हैं। इसलिए किसी नकारात्मक परिस्थिति से बच पाना सम्भव नहीं है, लेकिन खुद को इस परिस्थिति से भावनात्मक एवं आध्यात्मिक सहारे की मदद से बचाकर नकारात्मकता को स्वीकरात्मकता में बदला जा सकता है। मानव का दृष्टिकोण ऐसा होना चाहिए कि वह नकारात्मकता में भी सकारात्मकता को खोज ले। सिर्फ सकारात्मक सोच ही हमें इस संसार में खुशियां दे सकती हैं। हमारी हर सोच आने वाली परिस्थिति के बीज बोती है, तो क्यों न हम सकारात्मक सोच रखें। किसी मुश्किल घड़ी में यदि हम सकारात्मक सोच रखते हैं तो वह दुःखदायी परिस्थिति को भी सुखदायी बना देती है। जब हमारा मन पॉजिटिव होगा तब हमें दिव्यता का अनुभव होगा।

सकारात्मकता निर्मलता की निशानी है और मन की निर्मलता परम सुख है। किसी दुःखद घटना के वक्त सकारात्मक रहना कठिन है। ऐसी दशा में हम नकरात्मकता का किस तरह से सामना करे ताकि वह हमें कष्ट न दे। सांसारिक कठिनाईयों के बीच में रहकर सकारात्मक दृष्टिकोण रखना बहुत कठिन है फिर भी ज्ञानीजन कीचड़ में कमल के पत्ते की तरह निर्लिप्त रहते हैं। सकारात्मक सोच हमें बड़े से बड़े युद्ध में विजय प्राप्त करा सकती है और जीवन में हमें कई तरह की परेशानियों से मुक्त करा सकती है। संसार में ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है जिसके पास परेशानी न हो लेकिन हर इंसान परेशानी से रोता हुआ तो नहीं दिखायी देता। परेशानी के समय में भी जो अपनी सोच को विधायक बनाये रखता है, उससे लड़कर आगे सफल हो जाता है और वह परिस्थिति पर विजय प्राप्त कर लेता है। सकारात्मक विचार ईश्वर की देन है, जबकि नकारात्मक शैतान की। इस संसार में सुख–दुःख का द्वन्द्व चलता रहता है।

सकारात्मक सोच वाले लोग ही जीवन में सफल हो पाते हैं। सकारात्मक सोच वाले व्यक्ति के आसपास सभी लोग रहना चाहते हैं। आज का आदमी नकारात्मकता का शिकार है उसे शांति का अनुभव नहीं होता है। वह निरंतर बेचैन रहता है। नकारात्मकता को दूर करने के लिए यह जानना आवश्यक है कि यह क्यों पैदा होती है। हम मन का श्रम तो करते हैं किन्तु उसको विश्राम देना नहीं जानते हैं। हम चिन्तन करना जानते हैं किन्तु अचिन्तन की बात नहीं जानते, चिन्तन से मुक्त होना नहीं जानते।